International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal l -Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-l SSN: 2348-6848
p-l SSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

भारत के मध्य एशियाई देशों के साथ सम्बन्धः एक संक्षिप्त अवलोकन

विजय कुमार मिश्र
सहायक प्रोफेसर, राजनीति विज्ञान,
मंगला देवी स्मारक डिग्री कालेज, मसिका नैनी, इलाहाबाद।

वर्तमान समय में जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नित नवीन अविष्कार हो रहे हैं जिनका प्रत्यक्ष प्रभाव हमारे दैनिक जीवन में परिलक्षित होता है किन्तु ये परिवर्तन मानव जीवन के लिये कितने उपयोगी एवं सार्थक है, यह जानने के लिए हमे इनका पूर्ण ज्ञान होना आवश्यक है क्योंकि ज्ञान के अभाव में इन्हे अपनाना तथा इनसे लाभ प्राप्त करना अत्यन्त कठिन कार्य है। वर्तमान में विश्व के कई प्रमुख देश आतंकवाद, मानव तस्करी, भुखमरी, जलवायु परिवर्तन आदि समस्याओं से जूझ रहे हैं, वहीं भारत और इण्डोनेशिया मिलकर इन समस्याओं से निजात दिलाने में लगे हैं। दोनों ही देश पूर्वोन्मुखी नीति के दायरे में आते हैं तथा विकासशील देशों की श्रेणी में गिने जाते हैं। दोनों ही देश शिक्षा, स्वास्थ्य एवं पर्यटन के खेक्ष में भी एक–दूसरे को सहयोग दे रहे हैं। अतः कहा जा सकता है कि आने वाला समय दोनों ही देशों के लिए नया दौर होगा।

भारत मध्य एशियाई देशों के साथ सशक्त राजनीतिक सम्बन्धों का निर्माण चाहता है। इन देशों के नेताओं के साथ परस्पर बेहतर सम्बन्धों को बढ़ावा दिया जा रहा है। भारत रणनीतिक तथा सुरक्षा सम्बन्धों को बढ़ावा दिया जा रहा है। भारत रणनीतिक तथा सुरक्षा सम्बन्धी मामलों में इन देशों के सहयोग की अपेक्षा रखता है। इसमें सैन्य प्रशिक्षण, संयुक्त अनुसंधान आतंकरोधी अभियान तथा 'हार्ट ऑफ अफगानिस्तान' शामिल है।

भारत तथा मध्य एशियाई देशों के मध्य सम्बन्धों के विविध क्षेत्र

सोवियत संघ के विघटन के पूर्व भारत और सोवियत संघ के बीच बहुत ही गहरे सम्बन्ध रहे। वर्ष 1991 में जब इस संघ का विभाजन हुआ तब मध्य एशियाई देश जो रूस से अलग अपना

e-l SSN: 2348-6848
p-l SSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

स्वतंत्र अस्तित्व बनाने में लगे थे, भारत ने भी इन्हें सहयोग प्रदान किया। इन देशों ने वर्ष 1993 में अपने–अपने नये संविधान गठित किये, जो रूसी संविधान से भिन्न रहा। अतः इन देशों को गृह युद्ध की स्थिति का सामना करना पड़ा।

भारत की विदेश नीति के अन्तर्गत विश्व के अधिकांश देशों के साथ राजनयिक, व्यापारिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक सम्बन्ध रहे। इसी क्रम में भारत के मध्य एशियाई देशों के साथ भी प्रारम्भ से ही अच्छे सम्बन्ध रहे हैं। इन देशों के साथ समय–समय पर राजनीतिक मुद्दों तथा यात्राओं के माध्यम से कुछ महत्वपूर्ण विषयों पर समझौते होते रहे, जिनसे भारत से मध्य एशियाई देशों के रिश्ते मजबूत रहे।

कजाकिस्तान

कजाकिस्तान एशिया के एक बड़े भू–भाग पर फैला हुआ देश है, जो वर्ष 1991 से स्वतंत्र अस्तित्व में आया। इस देश की राजधानी अस्ताना तथा राजभाषा कजाख एवं रूसी है। भारत तथा कजाकिस्तान के सन्दर्भ मधुर रहे हैं। दोनों ही देशों के राजनयिकों ने कई राजकीय यात्राएं की तथा विभिन्न क्षेत्रों में महत्वपूर्ण समझौते भी किये। वर्ष 1992 में कजाकिस्तान के तत्कालीन राष्ट्रपति नूरसुल्तान नजरबायेव ने पहली विदेश यात्रा भारत की थी।

राजनीतिक एवं सामरिक सम्बन्ध

दोनों देशों के बीच राजनीति एवं सामरिक सम्बन्ध मजबूत रहे हैं। वर्ष 2009 में कजाकिस्तान के राष्ट्रपित महामहिम नूरसुल्तान नजरबायेव ने गणतन्त्र दिवस (26 जनवरी) पर भारत की राजकीय यात्रा के दौरान मुख्य अतिथि रहे। इस यात्रा के दौरान दोनों देशों के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्धों और सहयोग की दृष्टि से द्विपक्षीय सम्बन्धों को सुदृढ़ बनाने और सहयोग के क्षेत्रों को विविध बनाने के प्रति वचनबद्धता प्रकट की गई।

सांस्कृतिक सम्बन्ध

भारत और कजाकिस्तान के सम्बन्ध मध्यकाल से ही रहे हैं। मध्यकाल में आर्थिक और व्यापार की दृष्टि से लोगों का एक–दूसरे देशों में आना जाना था। कजाकिसतान में महत्वपूर्ण स्थान दिया गया।

महत्वपूर्ण समझौते

यूरेनियम समझौता भारत और कजाकिस्तान के बीच वर्ष 2015 से 2019 तक के लिये परमाणु ईधन के लिये 5000 टन यूरेनियम की आपूर्ति पर समझौता हुआ है। भारत ने कजाकिस्तान से असैन्य परमाणु सहयोग को बढ़ाने पर यह दूसरा बड़ा सहयोग किया है। इसके पूर्व में भी एक समझौते के अन्तर्गत कजाकिस्तान भारत को 2100 टन यूरेनियम प्रदान करता रहा है। यह समझौता 7–8 जुलाई, 2015 को प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की कजाकिस्तान यात्रा के दौरान हुआ।

अन्य समझौते

पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह की यात्रा के दौरान 7 महत्वपूर्ण क्षेत्रों में समझौते हुए, जो इस प्रकार हैं–

- तेल के क्षेत्र में ओएनजीसी द्वारा कैस्पियम सागर में सतपापेण तेज परियोजना में 25 प्रतिशत की साझेदारी का अधिग्रहण।
- परमाणु ऊर्जा के क्षेत्र में ईंधन की आपूर्ति परमाणु बिजली संयन्त्रों का निर्माण और परिचालन, यूरेनियम खानों, रिएक्टर सुरक्षा व्यवस्था।
- 2011–14 के बीच रणनीतिक साझेदारी के क्षेत्र हाइड्रोकार्बन, असैन्य नाभिकीय ऊर्जा, अन्तरिक्ष ऊर्जा, आईटी, साइबर सुरक्षा, स्वास्थ्य, कृषि एवं सांस्कृतिक आदान–प्रदान के क्षेत्र में समझौता।
- कम्प्यूटर के क्षेत्र मे साइबर सुरक्षा, स्पैम आदि।
- सिविल मामलों में कानूनी सहायता दोनों देशों के कानून के अनुसार सिविल मामलों में आपसी कानूनी सहायता।
- कृषि के क्षेत्र में कृषि अनुसंधान और तकनीकी, खाद्य और कृषि उत्पाद, खाद्य प्रसंस्करण।

- स्वास्थ्य के क्षेत्र में चिकित्सा सेवाओं और फार्मेसी के क्षेत्र सरकारी तथा शोध संस्थाओं के बीच समझौता।

भारत और कजाकिस्तान अपने आर्थिक और सामरिक सम्बन्धों को नया आयाम दे रहे हैं, इसके अन्तर्गत इन देशों ने अपने परमाणु ऊर्जा क्षेत्र, रक्षा, रेलवे, तकनीकी आदि के क्षेत्र में सहयोग बढ़ा रहे हैं; जिससे अन्य एशियाई देशों से आगे निकल सकें। भारत का सबसे बड़ा आर्थिक साझीदार कजाकिस्तान है, परन्तु अभी तक इनके आर्थिक सम्बन्ध बेहद कमजोर रहे हैं। वर्तमान में दोनों ही देश अपना आर्थिक सहयोग बढ़ा रहे हैं।

ताजिकिस्तान

ताजिकिस्तान भी सोवियत संघ से विघटन के पश्चात गणतन्त्र बना। वर्ष 1992 से 1997 तक गृह युद्ध से जूझता रहा इस देश की कूटनीति भौगोलिक स्थिति बहुत महत्वपूर्ण है। गृह युद्ध के कारण यहां की अर्थ–व्यवस्था चौपट हो गई। यहां की राजधानी दुशानबे है। भारत और ताजिकिस्तान के बीच गहरे सम्बन्ध रहे हैं। परन्तु इन दोनों देशों के बीच व्यपार एवं आर्थिक विकास सम्बन्ध उनकी क्षमता के अनुरूप नहीं है।

राजनीतिक तथा सामरिक सम्बन्ध

वर्ष 2017 में भारत और ताजिकिस्तान के राजनीतिक सम्बन्धों के पूरे 25 वर्ष हो जायेंगे। अब तक भारत और ताजिकिस्तान ने एक लम्बी रणनीतिक साझेदारी के स्तर पर द्विपक्षीय सम्बन्धों को एक नया आयाम दिया है। दिसम्बर, 2016 में ताजिकिस्तान के राष्ट्रपति एमोमाली रहमान दो दिवसीय भारत की यात्रा पर रहे । इस यात्रा के दौरान चार महत्वपूर्ण समझौते हुए। इसके पूर्व जुलाई 2015 प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने एशियाई देशों की यात्रा के दौरान क्षेत्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों, आतंकवाद एवं रक्षा क्षमताओं के विकास हेतु सहयोग देने की प्रतिबद्धता को दोहराया।

सांस्कृतिक संबंध

भारत और ताजिकिस्तान के लोगों के बीच सांस्कृतिक सम्बन्धों को मजबूत करने के लिये 2016–18 अवधि के लिये कला एवं संस्कृति के बीच सहयोग स्थापित करने के लिये दोनों

देश एक–दूसरे देश में 'संस्कृति दिवस' का आयोजन करेंगे। भारतीय कवि रवीन्द्रनाथ टैगोर की प्रतिमा भी ताजिकिस्तान में लगाई गई है। भारतीय फिल्में भी यहां बहुत लोकप्रिय हैं।

महत्वपूर्ण समझौते

भारत तथा ताजिकिस्तान के बीच अब तक आर्थिक, रक्षा आदि क्षेत्रों में कई महत्वपूर्ण समझौते हुए हैं, जो इस प्रकार हैं–

वर्ष 2013 के महत्वपूर्ण समझौते

- प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी और राष्ट्रपति रहमान के बीच द्विपक्षीय, क्षेत्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय मुद्दों पर व्यापक चर्चा हुई।
- ताजिकिस्तान ने अन्तर्राष्ट्रीय उत्तर–दक्षिण परिवहन कोरिडोर (आइएनएसटीसी) के लिये अपने समर्थन को दोहराया।
- कृषि क्षेत्र में भारतीय कम्पनियों का निवेश।
- आर्थिक विकास के क्षेत्र में (ऊर्जा सुरक्षा एवं जल विद्युत उत्पादन के क्षेत्र में ताजिकिस्तान ने भारत से और भागीदारी बढ़ाने के समझौते पर हस्ताक्षर किये।

वर्ष 2016 के महत्वपूर्ण समझौते

- दोहरे कराधान से बचने तथा राजकोषीय अपवंचन की रोकथाम के लिये द्विपक्षीय प्रोटोकॉल पर हस्ताक्षर
- धन शोधन सम्बन्धित अपराध और आतंकवाद के वित्त पोषण से सम्बन्धित वित्तीय खुफिया सूचनाओं के आदान–प्रदान के प्रसारण में सहयोग बढ़ाने हेतु समझौता
- द्विपक्षीय निवेश बढ़ाने हेतु दस्तावेज पर हस्ताक्षर।

दोनों देशों द्वारा शिक्षा, स्वास्थ्य, मानव संसाधन आदि के क्षेत्रों को बढ़ावा देने हेतु कई कार्यक्रम भी चलाये जा रहे हैं। भारत में हैवी इलेक्ट्रिकल लिमिटेड (भेल) तथा नेशनल हाइड्रोपॉवर कॉर्पोरेशन (एनएचपीसी) में ताजिकिस्तान के विशेषज्ञों के कार्यक्रम आयोजित होते रहे हैं। इसके अतिरिक्त दोनों देशों ने कारोबार, निवेश आदि में सहयोग बढ़ाने की

e-l SSN: 2348-6848
p-l SSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

सम्भावनाओं पर बल दिया। दोनों ही देशों ने परस्पर सहयोग से राजनीतिक एवं आर्थिक सम्बन्धों को मजबूत किया है।

किर्गिस्तान

यह भी मध्य एशिया में स्थित एक देश है, जिसकी सीमा कजाकिस्तान, उज्बेकिस्तान तथा तजाकिस्तान से मिलती है। किर्गिस्तान के साथ भारत के सम्बन्ध अन्य मध्य एशियाई देशों जैसे रहे हैं।

राजनीति एवं सामरिक सम्बन्ध

भारत और किर्गिस्तान के राजनीतिक सम्बन्ध उस समय से चले आ रहे हैं, जब यह सोवियत संघ का हिस्सा था। तब से दोनों देशों के बीच मैत्रीपूर्ण सम्बन्ध रहे हैं। किर्गिस्तान उन देशों में शामिल है, जिन्होंने कश्मीर मुद्दे पर भारत के रूख का समर्थन किया। इसके अतिरिक्त यह संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद् में भारत के स्थायी सीट के दावे का समर्थक भी रहा है।

भारत तथा किर्गिस्तान के मध्य खंजर नामक सैन्य अभ्यास की श्रृंखला है। दोनों देशों के बीच रक्षा सम्बन्धों में प्रशिक्षण के साथ–साथ अत्यधिक ऊंचाई वाले पर्वतीय क्षेत्र में तैनात सैनिकों को होने वालो रोगों के उपचार के लिये एक अनुसंधान केन्द्र को लेकर भी सहयोग दिया जा रहा है।

महत्वपूर्ण समझौते

विगत दिनों किर्गिस्तान के राष्ट्रपति अल्माज्वेक शार्शेनोविक अतमाबायेव चार दिवसीय भारत की यात्रा पर आये थे। इस यात्रा के दौरान भारत तथा किर्गिस्तान के मध्य 6 समझौतों पर हस्ताक्षर हुए, जो इस प्रकार हैं–

1. वृहद आर्थिक सहयोग को बढ़ावा देने के लिये दोनों देशों के बीच द्विपक्षीय निवेश सन्धि पर हस्ताक्षर।
2. आतंकवाद तथा रक्षा सहयोग सम्बन्ध बढ़ाने पर अन्तर्राष्ट्रीय सन्धि।
3. भारतीय विशेषज्ञों के साथ उच्च प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में सहयोग।

4. इन दोनों देशों के बीच युवाओं, संस्कृति, पर्यटन, कृषि खाद्य प्रसंस्करण, राजनयिक एवं श्रव्य संसाधनों से जुड़े मुद्दों पर समझौते।

5. भारत–किर्गिस्तान के मध्य 'खंजर' नामक सैन्य अभ्यास श्रृंखला अब कार्यक्रम के रूप में आयोजित की जा रही है। खंजर–3 2016 ग्वालियर में तथा 'खजर–4' 2017 किर्गिस्तान में होगा।

नई दिल्ली तथा बिशकेक के बीच हवाई यात्रा की शुरूआत भी एयर मानस द्वारा हाल ही में की जा चुकी है, जिससे दोनों देशों के बीच व्यापार एवं पर्यटन को प्रोत्साहन मिलने की उम्मीद बढ़ गई है, वर्ष 2015 की यात्रा के दौरान भारत के प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने किर्गिस्तान में टेलीफोन आधारित 'टेली मेडिसन लिंक' का उद्घाटन भी किया था। भारतीय तकनीकी एवं आर्थिक सहयोग (आईईटीसी) ने किर्गिस्तान में भारत के आर्थिक सहयोग की आधारशिला भी रख दी है।

उज्बेकिस्तान

उज्बेकिस्तान एशिया के केन्द्रीय भाग में स्थित देश है, जो चारों ओर थल से घिरा हुआ है। चौदहवीं शताब्दी में यहां तैमूर लंग का उदय हुआ था। वर्ष 1991 में सोवियत संघ के विघटन के बाद यह स्वतन्त्र गणतन्त्र बना। इसकी राजधानी ताशकंद है।

राजनीतिक एवं सामरिक सम्बन्ध

भारत और उज्बेकिस्तान के सम्बन्ध तभी से अच्छे हैं जब यह सोवियत गणराज्य का हिस्सा था। भारत के प्रथम प्रधानमंत्री पं. जवाहरलाल नेहरू ने वर्ष 1955 और 1961 में उज्बेकिस्तान की यात्रा की थी। भारत के दूसरे प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री वर्ष 1966 में पाकिस्तान के साथ शान्ति वार्ता हेतु ताशकंद गये थे, जहां उनकी मृत्यु हो गई। इनके सम्मान में ताशकंद में एक सड़क एवं एक विद्यालय का नामकरण किया गया है तथा दो मूर्तियां स्थापित की गई हैं। प्रधानमंत्री नरसिंहराव ने वर्ष 1996 में तथा मनमोहन सिंह वर्ष 2006 में यहां राजकीय यात्रा पर गये थे।

महत्वपूर्ण समझौते

e-l SSN: 2348-6848
p-l SSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

दोनों के बीच कई बार द्विपक्षीय सहयोग पर वार्ता एवं समझौते हो चुके हैं जो इस प्रकार हैं– वर्ष 2011 के महत्वपूर्ण समझौते प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह एवं उज्बेक के राष्ट्रपति इस्लाम उब्दुल गनेविच करीमोव के बीच सामरिक भागदारी पर संयुक्त बयान जारी किये गये, जिनमें कुछ महत्वपूर्ण समझौते भी हुए, जो इस प्रकार हैं–

1. दोनों ही देश द्विपक्षीय क्षेत्रीय एवं वैश्विक मुद्दों पर आपसी विचार–विमर्श जारी रखेंगें।
2. द्विपक्षीय व्यापार के वर्तमान स्तर को पारस्परिक सहयोग से विस्तार देंगे।
3. अपने–अपने देशों के व्यावसायिक निवेश अवसरों का लाभ उठाने का आह्वान किया गया।
4. सूचना प्रौद्योगिकी, भेषज, मानकीकरण, लघु एवं मझौले उपक्रम, कोयला गैसीकरण, तेल एवं गैस, विज्ञान आदि के क्षेत्र में विस्तार करने की नीति पर बल दिया।
5. अश्काबाद समझौते के द्वारा भारत को यूरेशिया के क्षेत्र में व्यापार एवं व्यायसायिक मेल–जोल बढ़ाने में मदद मिलेगी। अतः इस समझौते में भारत को भी शामिल किया गया।

वर्ष 2015 के महत्वपूर्ण समझौते प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की उज्बेकिस्तान यात्रा के दौरान तीन महत्वपूर्ण समझौते हुए तथा पूर्व में सभी समझौतों की पुर्नावृत्ति एवं प्रतिबद्धता जताई गई।

1. पर्यटन के क्षेत्र में करार
2. उज्बेकिस्तान के विदेश मामलों में मन्त्रालय तथा भारत के विदेश मन्त्रालय के बीच सहयोग पर प्रोटोकाल निर्धारण।
3. वर्ष 2015–17 के बीच दोनों देशों के बीच सांस्कृतिक सहयोग के लिये अन्तः सरकारी कार्यक्रम हेतु करार।

References

"'Made in Germany' lies in the 'gutter' after Volkswagen caught cheating". The Telegraph. 21 September 2015.

"EU-India summit off as Italian marines case rankles". Reuters. 16 March 2015.

"Gulf India remittance". Economic Times. Retrieved 4 May 2015.

"Gaza crisis: Modi govt's UNHRC vote against Israel must be lauded". Firstpost. 25 July 2014. Retrieved 16 September 2014.

"Find political solution for Islamic State, Rajnath Singh to advise Israel". The Economic Times. 4 November 2014. Retrieved 4 November 2014

"India, Brazil, South Africa – the power of three". bilaterals.org. Retrieved 21 November 2009.

"India, Bahrain to enhance maritime co-operation". The Economic Times. 25 December 2014. Retrieved 25 December 2014

Dua, B. D.; James Manor (1994). Nehru to the Nineties: The Changing Office of Prime Minister in India. C. Hurst & Co. Publishers. p. 261.

"Enjoy the difference". The Asian Age. India. Archived from the original on 18 August 2009. Retrieved 21 November 2009.

"India's new foreign minister a strong fan of Israel". The Times of Israel. 27 May 2014. Retrieved 11 November 2014

"Four nations launch UN seat bid". BBC. 22 September 2004. Retrieved 21 November 2009.

"India's Look-East Policy". Indianmba.com. Retrieved 21 November 2009

Kenton J. Clymer, Quest for freedom: the United States and India's independence (2013).

Sharma, Dhirendra (May 1991). "India's lopsided science". Bulletin of the Atomic Scientists: 32–36